ॐ जय जगदीश हरे

Shraddharam Phillauri (19th century) · rashikundli.com

ॐ जय जगदीश हरे,
स्वामी जय जगदीश हरे
भक्त जनों के संकट,
दास जनों के संकट,
क्षण में दूर करे
ॐ जय जगदीश हरे..
जो ध्यावे फल पावे,
दुःख बिनसे मन का,
स्वामी दुःख बिनसे मन का
सुख सम्पति घर आवे,
सुख सम्पति घर आवे,
कष्ट मिटे तन का
ॐ जय जगदीश हरे..
मात पिता तुम मेरे,
शरण गहूं मैं किसकी
स्वामी शरण गहूं मैं किसकी
तुम बिन और न दूजा,
तुम बिन और न दूजा,
आस करूं मैं जिसकी
ॐ जय जगदीश हरे..
तुम पूरण परमात्मा,

तुम अन्तर्यामी,

स्वामी तुम अन्तर्यामी

पारब्रह्म परमेश्वर,

पारब्रह्म परमेश्वर,

तुम सब के स्वामी

ॐ जय जगदीश हरे..

तुम करुणा के सागर,

तुम पालनकर्ता,

स्वामी तुम पालनकर्ता

मैं मूरख फलकामी,

मैं सेवक तुम स्वामी,

कृपा करो भर्ता

ॐ जय जगदीश हरे..

तुम हो एक अगोचर,

सबके प्राणपति,

स्वामी सबके प्राणपति

किस विधि मिलूं दयामय,

किस विधि मिलूं दयामय,

तुमको मैं कुमति

ॐ जय जगदीश हरे..

दीन-बन्धु दुःख-हर्ता,

ठाकुर तुम मेरे,

स्वामी रक्षक तुम मेरे

अपने हाथ उठाओ,

अपने शरण लगाओ,

द्वार पड़ा तेरे

ॐ जय जगदीश हरे..

विषय-विकार मिटाओ,

पाप हरो देवा,

स्वामी पाप हरो देवा

श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ,

श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ,

सन्तन की सेवा

ॐ जय जगदीश हरे,

स्वामी जय जगदीश हरे

भक्त जनों के संकट,

दास जनों के संकट,

क्षण में दूर करे

यह पाठ कहाँ से लिया गया है: BhaktiBharat
RashiKundli संपादकीय टीम द्वारा लिखित और समीक्षित · rashikundli.com